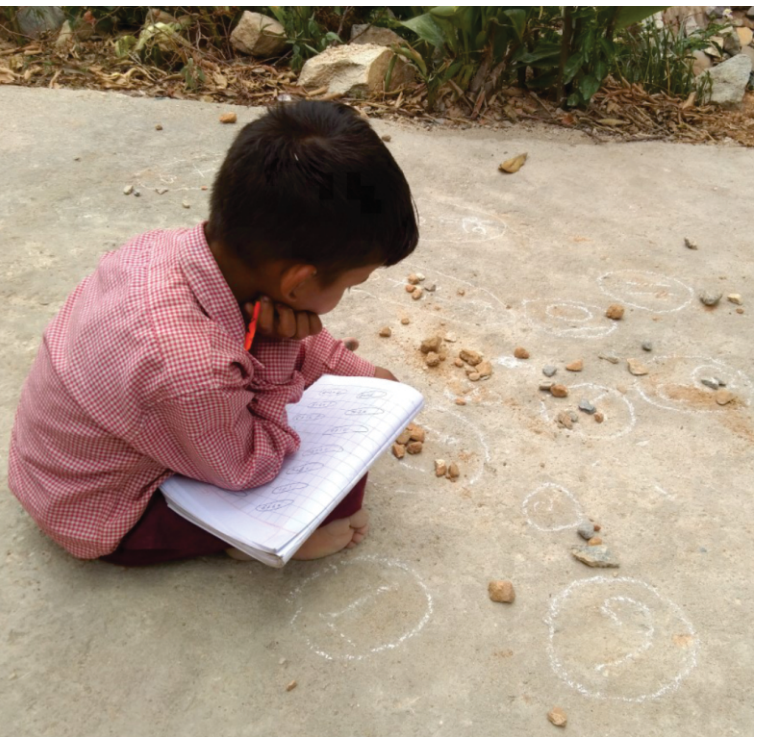

फोटो– अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

हर बचपन को मुस्कान देने की कोशिश

– जया चौधरी

विद्यालय में सिर्फ गुणवत्तायुक्त शिक्षा ही नहीं बल्कि मूल्य आधारित शिक्षा पर भी पूरा बल दिया जाता है। इसका समावेशी वातावरण बच्चों को स्वयं ज्ञान के सृजन के लिए प्रेरित करता है।

'मैडम जी क्या करें? हमारी तो किस्मत ही खराब है। बड़ा लड़का भी मानसिक तौर पर दिव्यांग है। अब ये अंकित भी।' अंकित के पिता ने उसकी तरफ इशारा करते हुए बताया। मगर, जाने वह किस दुनिया में गुम था। मानो वह हमें सुन ही नहीं रहा था। अंकित के पिता ने अपनी बात जारी रखी। उन्होंने कहा कि 'यह दो–तीन बार सिर के बल गिर चुका है। बड़ी मुश्किल से इसका इलाज करवाया पर दिमागी रूप से यह अब बहुत कमजोर है।' अंकित स्कूल नहीं आता था। इसकी वजह जानने के लिए मैंने उसके पिता से उसके बारे में पूछा तो उन्होंने सारी बातें एक बार में ही बता दीं।

मुझे प्राथमिक विद्यालय बालखिला में पढ़ाते हुए पांच साल से अधिक हो चुके हैं। इस दौरान बहुत सारे अनुभव हुए जो कभी भुलाए नहीं जा सकते। अंकित के साथ भी मेरा कुछ इसी तरह का अनुभव है। जब मैं इस स्कूल में शुरू में आई उसके एक साल तक अंकित कभी–कभार ही दिखाई देता था। जब भी वह आता गुमसुम–चुपचाप सिर नीचे झुकाए बैठा रहता। कई बार पूछने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करता था। मेरे मन में उसके लिए कई तरह के विचार चल रहे थे। कितनी उलझनों में बच्चा फंसा रहता होगा। न कोई दोस्त, न ही परिवारजनों का सहयोग और प्यार। कभी किसी ने उसके मन की बात जानने की कोशिश नहीं की। मैं हमेशा सोचती रहती कि कैसे इस बच्चे को मुख्यधारा से जोड़ सकूं। अब मेरे सामने एक ही लक्ष्य था कि अन्य बच्चों की तरह अंकित को भी वह सब दूं जो हर बचपन चाहता है यानी प्यार और खुशी। मगर यह काम इतना आसान नहीं था, जितना मैं सोच रही थी। उसके पास जाने भर से ही वह एकदम से सहम जाता।

फिर, मैंने योजना बनाई कि पहले क्यों न उससे दोस्ती की जाए। दो–तीन महीने उससे बात करने की कोशिश में बीत गए। मैं रोज कुछ उपहार लेकर उसके घर जाती और उसे स्कूल आने के लिए मनाती। लगातार उसके घर जाने के बाद उसके घरवालों का भी मेरे प्रति एक विश्वास जग गया था। इसलिए मेरी कोशिश में अब वे भी मेरा साथ देने लगे। अब वह स्कूल आने लगा। मगर मेरे सामने दूसरी चुनौती मुंह बाए खड़ी थी। स्कूल के दूसरे बच्चे भी अंकित को उसी भाव से स्वीकार करें, जिस भाव से मैं कर रही थी। मेरे लिए सभी बच्चों में उसके लिए संवेदनशीलता, स्नेह तथा सहयोग की भावना पैदा करना किसी चुनौती से कम नहीं रहा। मैं ज्यादा से ज्यादा कोशिश करती कि सभी बच्चे एक साथ खेलें और अन्य

गतिविधियों में भी शामिल रहे। इससे अंकित को भी बच्चों के साथ घुलने–मिलने का मौका मिल रहा था।

क्योंकि लगातार एक साल से अंकित स्कूल नहीं आ रहा था। उसके पिताजी ने दूसरे स्कूल से निकालकर बड़े भरोसे से उसका दाखिला हमारे स्कूल में करवाया था। हम उनके विश्वास को देखते हुए अंकित के लिए हर संभव प्रयास कर रहे थे। अब कभी हैड मैम उसे संभालती तो कभी हम सब मिलकर उसका ख्याल रखते। अब चूंकि अंकित सबसे घुलमिल गया था, ऐसे में अब उसे पढ़ने–लिखने के लिए भी प्रेरित किया जाने लगा। वह कुछ–कुछ लिखने का प्रयास करने लगा। हालांकि वह गलत लिखता था मगर मैंने कभी भी उसे टोका नहीं। बल्कि उसे शाबासी देते हुए कहती कि अरे वाह! अब तो आप बहुत बढ़िया कोशिश कर रहे हो। मेरी बात पर वह बड़े प्यार से मुस्कुरा देता, जिसे मैं सदा से देखना चाहती थी। धीरे–धीरे वह हिंदी और अंग्रेजी वर्णमाला के अलावा गिनती भी लिखने लगा। इस पूरी प्रक्रिया में मैं उसकी सबसे अच्छी दोस्त बन गई। मुझसे वह अपने मन की सारी बातें कहता। मेरे साथ वह खेल खेलता, कभी आंखों पर पट्टी बांधकर नाचने लगता, चित्रकारी करता। अब वह बहुत कम अनुपस्थित भी रहता। उसके प्रति उसके परिवारजनों का रवैया भी बदल रहा था। वे भी सकारात्मक सोच लिए अंकित को प्रेरित करते। हालांकि यहां तक उन्हें लाने में काफी वक्त लग गया। मेरे दिमाग में बस यही बात घूमती रहती कि हारना नहीं है।

मेरे विद्यालय में सारे बच्चे निम्न आर्थिक स्थिति वाले हैं, इसलिए मेरी कोशिश रही है कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में संसाधन कभी आड़े ना आए। इसके लिए मैंने सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को जारी रखने के लिए अपने आसपास पड़ी ढेरों सामग्री का इस्तेमाल करना शुरू किया। भाषा शिक्षण और गणित शिक्षण के लिए मैंने सैंड बॉक्स का उपयोग किया। बच्चे रेत पर उंगली फिराकर जब कुछ आकृति गढ़ते हैं तो उसे महसूस भी करते हैं। यह तरीका मुझे सिखाने के लिए बहुत कारगर लगा। इसके अलावा पुराने शादी के कार्ड, कार्टन, खाली बोतल, झाड़ू की सींक, पिस्ते के छिलके, पाइन कोन आदि वस्तुओं से बच्चों को आर्ट एंड क्राफ्ट के लिए प्रेरित किया। इनसे बने टीएलएम दिखने में सुंदर होते हैं और बच्चे सीखने के लिए लालायित भी रहते हैं। मैं पास ही बह रही बालखिला नदी के किनारे से सुंदर पत्थर चुनकर लाई और फिर बच्चों के साथ मिलकर उसमें कई तरह की आकृतियां भी बनाईं।

मेरे विद्यालय में सिर्फ गुणवत्तायुक्त शिक्षा ही नहीं बल्कि मूल्य आधारित शिक्षा पर भी पूरा बल दिया जाता है। इसका समावेशी वातावरण बच्चों को स्वयं ज्ञान के सृजन के लिए प्रेरित करता है। प्यार के दो बोल, थोड़ी शाबासी, अपनापन भी सीखने–सिखाने की लगन इनके जीवन को सकारात्मक मोड़ दे सकते हैं। विभिन्न रुचिकर शैक्षिक–सहशैक्षिक गतिविधियां विद्यालय को ज्ञान की प्रयोगशाला बनाने में मददगार होती हैं। यहां बच्चे अपने अनुभव से सीखते हैं। मेरे स्कूल में आज बच्चे बेहतर सीख रहे हैं, इसकी मुझे बेहद खुशी है।

(लेखिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय बालखिला मलारी, जोशीमठ, उत्तराखण्ड में अध्यापिका हैं)।

प्रवाह हेतु आमंत्रण

आप जानते ही हैं कि प्रवाह में शिक्षक साथियों के अनुभव एवं उनकी रचनाएं भी प्रकाशित की जाती हैं। शिक्षक साथी अपने लेख अथवा बच्चों की रचनाओं को प्रकाशन हेतु भेजना चाहें तो निम्न पतों पर प्रेषित करें।

- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, 360 (ख), आमवाला तरला, देहरादून, उत्तराखण्ड–248001**
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, कुड़ियाल भवन, भटवाड़ी रोड, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड–249193**
  फोन/फैक्स : 01374–222505
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, वार्ड नं.3, नियर गुरुद्वारा, दिनेशपुर, ऊधमसिंह नगर,उत्तराखण्ड**
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, लोअर मॉल रोड, कर्नाटक खोला, नियर डायट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड–263601**

ई–मेल: pravah@azimpremjifoundation.org